



SEPTEMBER
2025

SKPS AARAMBH

SEPTEMBER 2025

“O sweet September, thy first breezes bring
The dry leaf’s rustle and the squirrel’s laughter.”

— George Arnold

Dear Readers,

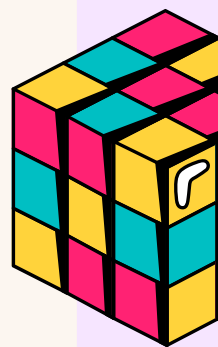
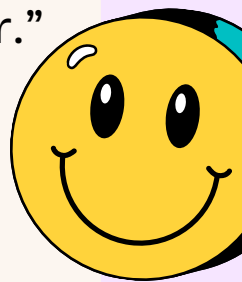
September arrives with a gentle shift — a time when the monsoon slowly retreats, and the first cool breezes whisper of change. This month has been one of hard work, reflection, and fresh resolve, as students completed their Mid-Term Examinations with dedication and determination.

The once-quiet classrooms now come alive again with cheerful voices, shared experiences, and a renewed sense of purpose. Like the rustling leaves of September, this season invites us to pause, reflect on what we’ve learned, and embrace new goals for the journey ahead.

The month also came with Hindi Diwas, highlighting the richness and beauty of our national language through poems, speeches, and cultural expressions.

This edition of Aarambh celebrates resilience, growth, and the spirit of moving forward, much like September itself — calm, thoughtful, and full of promise.

Happy Reading!



RAVAN CRAFT MAKING ACTIVITY

On the joyful occasion of Dussehra, the tiny tots of KG classes at Sri Krishna Public School participated in a Ravan Craft Making Activity filled with colours, creativity, and excitement.

With the guidance of their teachers, the children used colourful papers, cut-outs, and decorative materials to make their own Ravan crafts. Their enthusiasm and happy faces made the activity truly delightful.

Through this fun-filled session, students were introduced to the story and values of Dussehra, learning that good always triumphs over evil. This activity added a festive touch to the celebrations and making the day memorable for everyone.





SHOW AND TELL COMPETITION



Exploring the World of Birds and Animals



To nurture confidence, creativity, and a love for nature, a Show and Tell Competition was organized for Class II students at Sri Krishna Public School.

The highlight of the day was the students' delightful costumes — they came dressed as different birds and animals, bringing the jungle and skies alive with their presence. From graceful peacocks and chirping sparrows to mighty lions and clever rabbits, each child confidently introduced themselves as their chosen creature, sharing fun facts and special traits. The activity not only built their public speaking skills, but also strengthened their connection with nature, reminding everyone that animals and birds are our companions on this planet. The event was a wonderful blend of learning, expression, and festive excitement



हिन्दी का गौरव — विद्यार्थियों की कलम से



नारी शक्ति

कोमल है कमज़ोर नहीं तू
शक्ति नाम ही नारी हैं...
जग को जीवन देने वाली
मौत भी तुझसे हारी है...
सती के नाम पर तुझे जलाया
मीरा के नाम पर जहर पिलाया
सीता जैसी अग्नि परीक्षा
आज भी जग में जारी है..



कोमल है कमजोर नहीं तू
शक्ति का नाम ही नारी है.
इल्म में, हुनर में, दिल में, दिमाग में
किसी बात में, कम तो नहीं तू
पुरुषों वाले सारे ही
अधिकारों की अधिकारी है तू
बहुत हो चुका अब मत सहना
तुझ इतिहास बदलना है.
नारी को कोई कह ना पाए
अबला है बेचारी है...

कोमल है कमजोर नहीं
शक्ति का नाम ही नारी है ।

प्रिंस
दसवीं बी

स्वदेशी पर स्वाभिमान

देश की मिट्टी में पनपा है यह गौरव
हर स्वदेशी चीज़ से छुपा है
प्रेम और भरोसा ।

विदेशी चमक-धमक दमक में छुपा है दूरियों
का सपना,
स्वदेशी में है अपनापन, हर घर आँगन का सपना
जब हम अपनाएंगे स्वदेशी का सामान,
बढ़ेगा देश की अर्थव्यवस्था का मान।
लोकल दुकानदार हैं देश का सहारा,
उनके आगे बढ़ने से ही मिलेगा देश विकास का
इशारा मिलेगा ।

चलो मिलकर लें यह प्रण,
आज स्वदेशी की राह चलें,
बढ़ाएँ अपनी शान।
देश बनाए स्वावलंबी,
मजबूत और आत्मनिर्भर,
जहाँ हर घर में हो देश की खुशहाली का
इतिहास।

स्वर्णा
दसवीं ए



मातृभाषा हिन्दी

हिन्दी मात्र एक भाषा नहीं बल्कि हमारी मातृभूमि की पहचान है। यह वह मधुर भाषा है जो हमारे विचारों, भावनाओं और संस्कृति को अपनी धाराओं में समाहित किए हुए है।

हमारे लिए हिन्दी एक सेतु की तरह है, जो अलग भाषाएँ बोलने वालों को जोड़ देती है। अगर हम कहीं दिल्ली जाएँ या मुम्बई, हम हिन्दी में बात करें, सबको हलचल समझ में आती है। यह जादू जैसा है।

हिन्दी को लिखना भी काफी महत्वपूर्ण है। यह जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी भी जाती है। इसलिए गलत हिन्दी दुर्लभ है। हमारी लापरवाही होती है, न कि हिन्दी की कमजोरी। इसकी लिपि देवनागरी इसकी लिखावट, स्पष्टता और सरलता को और बढ़ाती है।

हम सबने कभी न कभी तो शौक-शौक में फोन या कम्प्यूटर पर हिन्दी लिखने की कोशिश की ही होगी। शुरू में थोड़ी कठिनाई लगती है पर फिर भी परिचय की कहानियाँ, दादी माँ के मुँह से सुनाई संगीत, सरस, मधुर बातें हम हिन्दी में सुनना और बोलना ज़्यादा पसंद करते हैं। सच मानो, खाने में मसाले की तरह हिन्दी भी जीवन में स्वाद भर देती है। कहानियाँ और कविताएँ सबका स्वाद बढ़ा देती हैं।

सबसे बड़ी बात, हिन्दी ने अपनत्व का झरना झराया है। हिन्दी हम सबके लिए प्राकृतिक है। यह हमारे मन की आत्मा और दिमाग की आवाज़ है। तभी तो जब हम पर जवाब देने का मौका आता है, अपनी पसंदीदा भाषा में बोलते हैं — चाहे राजनीति की बात करनी हो या पार्टी में किसी से बातचीत करनी हो, कभी स्वाभाविक रूप से हिन्दी प्रयोग करते हैं।

टीवी या फिल्मों देखने के बाद जब कोई मित्र पूछता है — अच्छा था? तो हम सहज ही कहते हैं, 'अरे, हाँ!' या 'नहीं!'

जब हम हिन्दी बोलते हैं, तो हमें अपने मन की बात कहने में आसानी होती है। विद्यालय में शिक्षकों से हिन्दी में बातें करना, सुनना और समझना, भावनाओं को व्यक्त करने में सहजता लाता है। हिन्दी के पन्नों में सादगी और सरलता है। हिन्दी के पन्नों में सौंदर्य है। हमारे लिए दूसरी किसी भाषा में आत्मीयता सुनना मुश्किल है और हिन्दी के तो विचारों में ही स्वतंत्रता है।

नूपुर

दसवीं बी

भारतीय संस्कृति

भारत एक देश ही नहीं बल्कि वह भूमि है जिसका हर एक हिस्सा अपनी सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता है। यहाँ राज्यों की पहचान उनके क्षेत्रीय परिधानों से होती है। भारत की संस्कृति किताबों तक सीमित नहीं है, वह तो लोगों के जीने का आधार है।

यहाँ कहीं ढोल ढमाकों में, कहीं वंदनाओं में नमस्ते से लोगों का स्वागत किया जाता है। यहाँ की रहन-सहन, बोलचाल, ध्वनियाँ, सब परिवार की तरह जुड़ी दिखाई देती हैं। जैसे एक स्त्री का सम्मान उसके लिए उसका गहना होता है, उसी प्रकार भारतीयों के लिए उनका रहन-सहन उनकी संस्कृति है।

यह संस्कृति अतीत नहीं है, यह वर्तमान की नींव और भविष्य का आधार है। भारत का प्रत्येक त्यौहार यहाँ अलग-अलग प्रकार का आनंद देता है। यहाँ विभिन्न त्यौहारों को मनाया जाता है — होली, दीवाली जैसे त्यौहारों की सांस्कृतिकता सब के लिए अलग हैं। इतनी विविधता होने के बावजूद भी यहाँ की संस्कृति में एकता की भावना है।

इसीलिए भारत 'अनेकता में एकता' का देश है।

कनिष्का

बारहवीं डी

